EDUCATIONAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons) Part-III

Paper-VI (Group B)

By- Dr. Ramendra Kumar Singh
D.K. College, Dumraon (Buxar)
(VKSU, Ara)

ESSAY TYPE OF EXAMINATION & OBJECTIVE TYPE OF EXAMINATION

शिक्षा जीवनपर्यन्त चलनेवाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बालकों के व्यवहार का परिमार्जन एवं परिष्कार होता है। फलतः बालकों का सर्वाङ्गीण विकास हो पाता है। शिक्षा के माध्यम से अर्जित ज्ञान की जाँच अथवा मूल्यांकन की एक बहुत ही महत्वपूर्ण पद्धति परीक्षा है। वर्तमान में परीक्षा के कई प्रारूप हैं, जिनका उपयोग मूल्यांकन के लिये किया जाता है। परीक्षा के प्रमुख प्रकारों को मोटे तौर पर हम दो भागों में बाँटते हैं।-

(A) निबन्धात्मक परीक्षा

(B) वस्तुनिष्ठ परीक्षा

परीक्षा के परम्परागत तरीका को Essay type of Examination कहा जाता है। इसकी तुलना में वस्तुनिष्ठ प्रकार की परीक्षा नवीन एवं व्यापक है। सी० वी० वुड के अनुसार परीक्षा की वस्तुनिष्ठ प्रणाली बहुवैकल्पिक, सत्य-असत्य, मिलान या पूरक प्रकार (Completion) की होती है।

दोनों में अन्तर :- दोनों प्रकार की परीक्षा प्रणालियों की तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाते हैं कि दोनों ही द्वारा बच्चों की योग्यताओं एवं ज्ञान की मूल्यांकन किया जाता है। दोनों ही प्रारूपों

की अपनी कुछ खुबियाँ एवं खामियाँ हैं। दोनों का ही अपना अपना महत्व है। इसके बावजूद दोनों में काफी अन्तर है, जिसे निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है:

(1) निबन्धात्मक परीक्षा एक तरह की आत्मगत परीक्षा है इसमें वस्तुनिष्ठता का अभाव होता है, जबकि वस्तुनिष्ठ परीक्षा की विश्वसनीयता अधिक होती है। वस्तुनिष्ठ परीक्षा एक तरह की ~~obj~~ वस्तुनिष्ठता प्रधान परीक्षा होती है।

(2) निबन्धात्मक परीक्षा प्रारुप को परम्परागत परीक्षा कहा जाता है क्योंकि यह पुरानी परीक्षा पद्धति है, ~~जब~~ दुसरी तरफ Objective type of Examination एक आधुनिक परीक्षा प्रणाली है। इसका प्रचलन निबन्धात्मक परीक्षा की दोषों को दूर करने के लिये किया गया।

(3) निबन्धात्मक परीक्षा की तुलना में वस्तुनिष्ठ परीक्षा का क्षेत्र व्यापक होता है। Essay type of Examination में कुल 10 या 12 चयनित प्रश्न होते हैं जबकि Objectivetype of Examination का क्षेत्र काफी बड़ा होता है जो सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को आच्छादित करता है।

(4) दोनों परीक्षा प्रारुपों का उद्येश्य एवं कार्य में भी अंतर होता है। Essay type of examination में छात्रों की Reasoning thinking एवं understanding की जाँच अच्छी तरह से हो जाती है, जबकि ~~Essay~~ objective type of examination में Memory जाँच होती है। यह एक तरह की Memory test है।

(5) निबन्धात्मक परीक्षा में मूल्यांकन में एकरुपता का अभाव होता है। एक ही प्रश्न को अलग अलग परीक्षक से जाँच कराने पर दिये गये अंको में अन्तर होता है। दुसरी तरफ वस्तुनिष्ठ परीक्षा में एकरुपता पाई जाती है। प्राप्त अंको में Variation नहीं होगा चाहे कितनी बार भी जाँच क्यों न किए जाए।

(6) निबन्धात्मक परीक्षा में पक्षपात होने की संभावना हमेशा बनी रहती है। परीक्षक अपने चहेते छात्रों को अधिक अंक दे देते हैं। दूसरी तरफ वस्तुनिष्ठ परीक्षा में पक्षपात की संभावना नहीं के बराबर होती है क्योंकि यह बिल्कुल ही पारदर्शी एवं वस्तुनिष्ठ होता है।

(7) निबन्धात्मक परीक्षा में कदाचार की संभावना अधिक रहती है क्योंकि प्रश्न सीमित एवं वर्णात्मक होते हैं। गेस, गाईड से नकल करना आसान होता है। दूसरी तरफ objective type of exam में प्रश्नों का उत्तर ढूंढ़कर नकल करना कठिन होता है।

(8) essay type of examination वास्तव में Hit and Miss के सिद्धान्त पर आधारित होता है। यदि गेस लड़ गया तो Hit अन्यथा नहीं लड़ा तो Miss और फेल हो जाते हैं। दूसरी तरफ वस्तुनिष्ठ परीक्षा में गेस करके पढ़ना संभव नहीं है। पूरा पाठ्यक्रम खंगालना पड़ता है।

(9) निबन्धात्मक परीक्षा में छात्रों की सुलेख अच्छी होती है। लेखन कला विकसित होती है, जबकि वस्तुनिष्ठ परीक्षा में छात्रों में लेखन शैली की अच्छी विकास नहीं हो पाती है।

(10) essay type में छात्र अपने भाव संवेग, प्रेरणा आदि की अभिव्यक्ति करने में सफल होते हैं। दूसरी तरफ वस्तुनिष्ठ परीक्षा में उसकी अभिव्यक्ति नहीं हो पाती है।

(11) वस्तुनिष्ठ परीक्षा में छात्रों की रचनात्मक एवं आलोचनात्मक क्षमता / शैली का विकास नहीं हो पाता है। दूसरी तरफ निबन्धात्मक परीक्षा में रचनात्मक, आलोचनात्मक एवं अन्य शैलियों का विकास होने की प्रबल गुंजाईश होती है।

(12) प्रश्न चयन की दृष्टि से भी दोनों में अन्तर है। निबन्धात्मक परीक्षा में परीक्षकों द्वारा प्रश्नों का चयन आसान होता है जबकि वस्तुनिष्ठ परीक्षा में यह एक कठिन कार्य हो जाता है। पूरे पाठ्यक्रम को खंगालना पड़ता है। परीक्षक को expert होना आवश्यक है।

(13) निबन्धात्मक परीक्षा में छात्र इधर-उधर की बातों को लिखकर परीक्षक को बरगलाने का प्रयास करते हैं। कई बार अर्नगल बातें भी लिख डालते हैं; जबकि वस्तुनिष्ठ परीक्षा में अपनी तरफ से जोड़-तोड़ करना काफी कठिन कार्य है।

(14) स्वास्थ्य के लिहाज से निबन्धात्मक परीक्षा छात्रों पर अधिक प्रतिकूल प्रभाव डालता है क्योंकि छात्र को लम्बे प्रश्नों का उत्तर अधिक समय लगभग 3-4 घंटे में देना पड़ता है। दूसरी तरफ वस्तुनिष्ठ परीक्षा में 1-2 घंटे का समय लगता है। अतः दोनों में इस दृष्टि से भी अंतर है।

(15) वस्तुनिष्ठ परीक्षा में भाषा, व्याकरण की उपेक्षा होती है। फलतः छात्रों में लेखन शैली एवं भाषणशैली का अभाव पाया जाता है जबकि निबन्धात्मक परीक्षा में खुलकर लिखने की छूट होती है जिससे छात्र में उन योग्यताओं का समुचित विकास होने की प्रबल गुंजाइश होती है।

(16) मनोवैज्ञानिकों ने दोनों में अंतर करते हुए कहा है कि निबन्धात्मक परीक्षा एक तरह की Recall test है जबकि वस्तुनिष्ठ परीक्षा Recognition test है। दोनों में उच्च सह सम्बन्ध पाया जाता है।

<u>निष्कर्ष</u>:- उपर्युक्त तथ्यों पर समालोचनात्मक दृष्टिकोण से देखने पर स्पष्ट हो जाता है कि दोनों ही परीक्षा प्रणाली छात्रों की योग्यताओं एवं ज्ञान को मापने की एक महत्वपूर्ण तरीका है। इन दोनों प्रारूपों में कई तरह के भेद हैं तथापि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। अतः दोनों का प्रयोग परीक्षा में सीमित रूप से करना ही श्रेयस्कर है।

[signature]
.08.2020